"ताम्र संग्रह संस्कृति"

Mandip kumar chaurasiya

Guest Assistant professor

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

M.A. Semester - III

Paper/CC – 11 Pre and Proto History of India and Ancient Potteries

ताम्बे के बने हुए विशिष्ट प्रकार के उपकरण सर्वप्रथम 1822 ई० में उत्तरप्रदेश के कानपुर जिले में स्थित बिठूर नामक स्थान से मिले थे। तब से लेकर आज तक इस प्रकार के उपकरण कहीं न कहीं से आकास्मिक रूप में प्राय: मिलते रहते हैं। इस प्रकार के उपकरण समूह में मिलते रहें हैं; अत: इन्हें ताम्र संग्रह या कॉपर होर्ड्स की संज्ञा दी गई हैं। ये तम्रनिधियां खेत जोतते समय किसी किसान को, या नहर की खुदाई करते समय अथवा सड़क बनाने के लिए मिट्टी खोदते समय किसी व्यक्ति को प्राय: मिलती रही हैं।

उपरी गंगा नदी घाटी से बंगाल और उड़ीसा के बीच प्राय: 90 स्थलों से ताम्र संग्रहों की प्राप्ति हुई हैं। हालाँकि हरियाणा, राजस्थान और मध्यप्रदेश के अतिरिक्त कुछ ताम्र संग्रह गुजरात, राजस्थान, केरल, कर्नाटक तथा तमिलनाडु में भी मिले हैं।

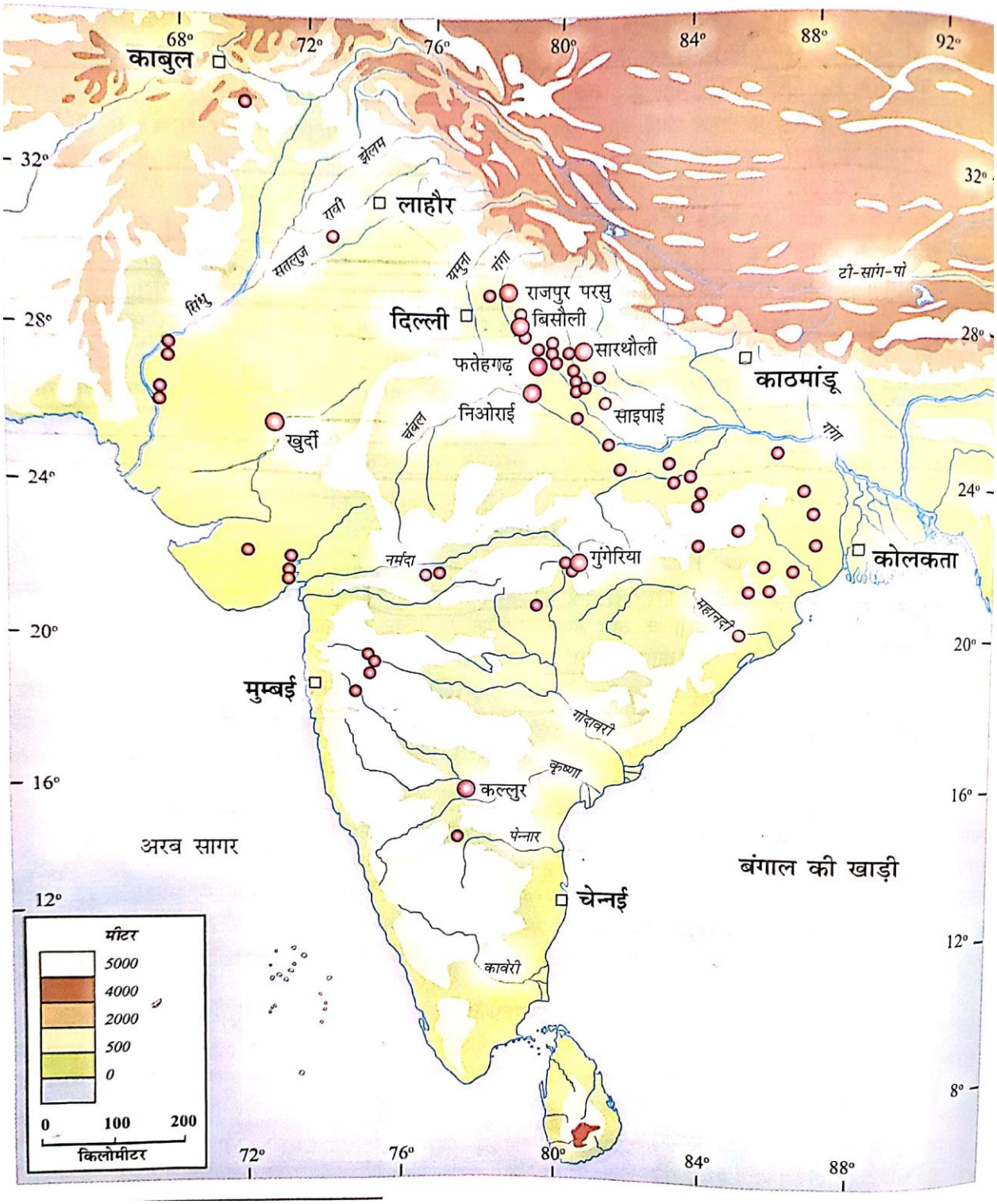

Fig. – 1 ताम्र संग्रह स्थल

एक सामान्य ताम्र संग्रह केंद्र से 1 – 47 के औसत के बीच ताम्र वस्तुएं मिलती हैं, किन्तु मध्यप्रदेश के गुंगेरियां नमक स्थान पर एक ही ताम्र संग्रह से 424 ताम्र वस्तुओं की प्राप्ति हुई हैं, जिनका सम्मिलित भार 200 किलोग्राम से ऊपर है। इस ताम्र संग्रह के साथ 102 चाँदी की वस्तुएं भी मिली हैं। चूँकि ताम्र संग्रहों की अधिकांश प्राप्तियां आकास्मिक परिस्थितियों में हुई हैं, इसलिए उपयुक्त सांस्कृतिक स्तर विन्यास के आभाव में इनके तिथि निर्धारण में काफी कठिनाई होती है। ऐसा लगता है कि बिहार और पश्चिम बंगाल के ताम्र संग्रह ऐतिहासिक काल के है। ऐसी परिस्थिति में इटावा जिला के साईपई नमक केंद्र में जहाँ ताम्र संग्रह की प्राप्ति गैरिक मृदभांड स्तर की खुदाई के दौरान हुई थी, विशेष महत्व रखती हैं।

ताम्र संग्रहों में विभिन्न प्रकार के भलाग्र, काँटेदार बर्छी, एंटीना वाले तलवार और ताम्र मानवाकृतियाँ सम्मिलित हैं। इनमे से प्राय: सभी को आखेट से जुड़े उपकरणों के रूप में देखा जा सकता है। हालाँकि, ताम्र संग्रहों से प्राप्त वस्तुओं के बीच भौगोलिक आधार पर काफी विविधताएँ देखी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए बिहार, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा जैसे पूर्वी ताम्र संग्रह केन्द्रों में विभिन्न प्रकार के भालाग्र और कुल्हाड़ की प्रमुखता है। जबकि उत्तरप्रदेश और हरियाणा के ताम्र संग्रह केन्द्रों से ताम्र मानवाकृतियाँ, एंटीना वाले तलवार, काँटेदार बर्छियां इत्यादि की अधिकता देखि जा सकती हैं। राजस्थान के स्थलों से ज्यादातर चौड़ा और लम्बा पूराकुठार मिलता हैं।

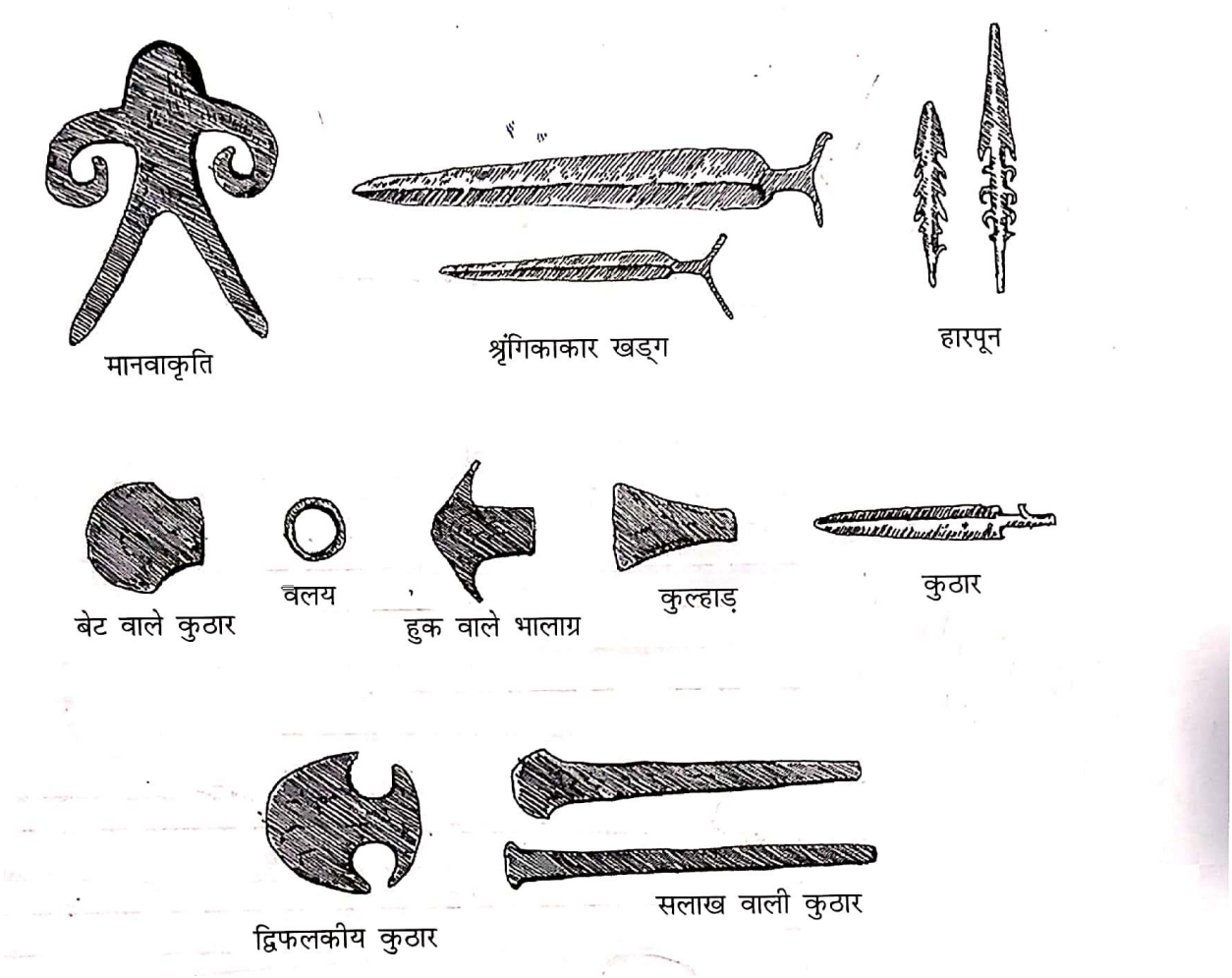

Fig. – 2 ताम्र से निर्मित वस्तुए

<u>तांबे की बनी मानव आकृतियाँ</u>

ताम्र संग्रहों में सबसे रहस्यमय उपादान ताम्बे की बनी मानव आकृतियाँ हैं। यह एक बड़े आकर की वास्तु है जिसकी लम्बाई 25 से 45 से.मी. और चौड़ाई 30 से 43 से.मी. और वजन लगभग पांच किलों तक पाया जाता हैं। प्रत्येक मानवाकृति

की लम्बाई उसकी चौड़ाई से अधिक है। केवल बिसौली से प्राप्त उदाहरण अपवाद हैं। ऐसी आकृतियों में जो हाथ है, वो थोड़े अन्दर की ओर मुड़े हुए हैं और इनका उपरी हिस्सा धारदार है। इनके पैर काफी फैले हुए हैं। इनके हाथ सर की अपेक्षा पतले हैं, सर को पीटकर मोटा बनाया गया हैं। ताम्र संग्रहों में सबसे रहस्यमय उपादान ताम्बे की बनी मानव आकृतियाँ हैं।

2001 में 31 ताम्बे की मानव आकृतियाँ एक साथ उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जिला के मदरपुर में एक साथ पाई गई। यह उत्खनन कार्य (डी० वी० शर्मा) एवं अन्य के द्वारा 2001-2002 में किया गया। ईट बनाने के लिए मिट्टी की खुदाई करते समय इनको पाया गया। सभी ताम्र मानव आकृतियाँ एक ही स्थान से मिली है, जिनको एक के ऊपर एक सजा कर रखा गया था। इतनी बड़ी संख्या में इसके पहले कभी भी इतनी ताम्र मानवाकृतियाँ नहीं पाई गई थी। इससे भी रोचक तथ्य यह है कि सभी ताम्र मानवाकृतियों का आकर एक समान नहीं हैं और इनमे से कुछ मानव आकृतियाँ ऐसी है जो और कही भी पाई नहीं गई। जिस स्तर विन्यास से यह ताम्र मानवाकृतियों का संग्रह पाया गया उससे गैरिक मृदभांड संस्कृति (OCP) के अन्य उपादान भी प्राप्त हुए। मदनपुर ऐसा स्थान प्रतीत होता है जो ताम्र मानवाकृतियों के निर्माण का एक केंद्र रहा होगा।

इनका कोई धार्मिक या अनुष्ठानिक महत्व भी रहा होगा। ध्यान देने वाली बात यह भी है कि मानवाकृतियाँ जो इस ताम्र मानवाकृतियों से मिलती जुलती हैं, उत्तरी भारत के कई हिस्सों में आज भी शनि देवता के रूप में उनका पूजन किया जाता है।